eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

भूमंडलीकरण के युग में गांधी के सर्वोदय सिद्धांत की प्रासंगिकता

[1]विवेक सिंह
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, भारतीय महाविद्यालय फर्रुखाबाद, उ0प्र0

Received: 07 July 2021, Accepted: 15 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

मानवीय सभ्यता के उदय से ही न्याय समानता और सामाजिक न्याय को स्थापित करने के लिए मनुष्य निरंतर प्रयत्नशील रहा है। इसके लिए हमेशा संघर्ष करता रहा है। लेकिन कुछ प्रभुत्वशाली और शोषक वर्ग के द्वारा इसमें हमेशा व्यवधान पैदा किए जाते रहे। जिससे उनके प्रभुत्व हमेशा बने रहें। उनके विशेषाधिकार हमेशा कायम रहे। लेकिन ज्ञान, विज्ञान और पुर्नजागरणों के कारण मनुष्यों में जैसे–जैसे राजनीतिक चेतना बढ़ती गई, वैसे–वैसे सामान्य से सामान्य मनुष्य भी अपने हक और अधिकार के लिए उठ खड़ा हुआ। जिससे हर व्यक्ति को समान स्वतंत्रता और जीवन में आगे बढ़ाने के समान अवसर प्राप्त हो सके।

भूमंडलीकरण ने मनुष्य की समक्ष अनेक व्यापारिक गतिविधियों के अवसर तथा रोजगार के अनेकों रास्ते खोल दिए। सेवाओं और वस्तुओं के परस्पर आदान–प्रदान के साथ–साथ समृद्धि बढ़ती गई। लेकिन यह समृद्धि सभी लोगों तक समान रूप से नहीं पहुंच पाई । यह कुछ लोगों तक ही सीमित रही। हाशिए पर जीने वाले लोगों को इस समृद्धि का कोई लाभ न मिला,न ही उन्हें रोजगार के समान अवसर मिले। जिसका नतीजा यह हुआ कि भूमंडलीकरण ने जिस समृद्धि, विकास और सामाजिक न्याय का सपना दिखाया था वह पूरा न हो सका। इसका नतीजा यह हुआ कि वैश्विक स्तर पर फिर यह चर्चा शुरू हो गई कि भूमंडलीकरण में कहां कमियां हैं। जिसकी वजह से सभी लोगों के समान विकास और सभी लोगों को समान रूप से अवसर प्राप्त नहीं हो पा रहा है। ऐसे समय में दुनिया की निगाह गांधी जी के सर्वोदय सिद्धांत की ओर गई। सर्वोदय सिद्धांत ऐसी संजीवनी है जो सभी मनुष्यों के समग्र विकास की बात करता है। इसे इस तरह भी कह सकते हैं की अंतिम मनुष्य के संपूर्ण विकास की परिकल्पना पर आधारित है। जब तक समाज के अंतिम आदमी का संपूर्ण विकास नहीं हो जाता, तब तक संपूर्ण सामाजिक आर्थिक व्यवस्था न्याय पूर्ण एवं समानता परक नहीं मानी जा सकती।

कीवर्ड– समानता, सामाजिक न्याय, समान अवसर, भूमंडलीकरण, वैश्विक गांव, सर्वोदय।

Introduction

विज्ञान और संचार क्रांति के फल स्वरुप दुनिया में राष्ट्र का राष्ट्र से दूरी और व्यक्ति से व्यक्ति की दूरी कम होती चली गई। सड़क, रेलवे और वायु परिवहन के माध्यम से दुनिया के सभी देश और सभी व्यक्ति एक दूसरे से कनेक्ट होते चले गए। किसी भी प्रकार की सूचना, ज्ञान, वस्तु और सेवाओं का आदान–प्रदान आसानी से और बहुत ही कम समय में संपन्न होने लगा है। औद्योगिक क्रांति के बाद वाणिज्य और व्यापारिक गतिविधियों में अभूतपूर्व बढ़ोतरी देखी जा रही है। आर्थिक, तकनीकी और प्रौद्योगिक हितों के कारण हर राष्ट्र एक दूसरे पर परस्पर निर्भर होता चला जा रहा है और इसका नतीजा यह रहा की आज पूरी दुनिया एक "वैश्विक गांव" के रूप में परिवर्तित हो गई है। भूमंडलीकरण की संकल्पना आर्थिक संकल्पना ज्यादा है। जिसमें आर्थिक हितों एवं समृद्धि पर ही ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इसका

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

परिणाम यह देखने को मिल रहा है कि भले ही आर्थिक समृद्धि बढ़ रही हो, लेकिन इसकी वजह से प्रतिस्पर्धा, बैमनस्य और प्रभुत्व स्थापित करने की इच्छा भी बढ़ती जाती है। जबकि गांधी जी का सर्वोदय का सिद्धांत ज्यादा ही सामाजिक, मानवीय और पर्यावरण के अनुकूल है। यह आर्थिक हितों के साथ–साथ व्यक्ति के सामाजिक, मानवीय एवं पर्यावरण संरक्षण के हितों को भी आत्मसात करके आगे बढ़ने की बात करता है। इस लेख में हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि आज के भूमंडलीकरण के युग में गांधी जी के सर्वोदय सिद्धांत किस तरह से उपयोगी और प्रासंगिक हैं।

सर्वोदय का अर्थ है– "सबका उदय" अर्थात सबका विकास, हर तरह से विकास। समाज के हाशिए पर जी रहे लोगों का चतुर्मुखी विकास। सर्वोदय सिद्धांत सामाजिक न्याय, सब के समान अवसर, समानता एवं न्याय के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें प्रतिस्पर्धा और हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। यह मिलजुल रहने और सहअस्तित्व वाली समावेशी और टिकाऊ विकास की बात करता है। जिससे हर व्यक्ति का उत्थान हो सके। गरीबी, अशिक्षा, शोषण और रोग से मुक्त एक न्यायपूर्ण स्वतंत्र समाज की स्थापना हो सके। सामाजिक न्याय एवं समानता की प्राप्ति के लिए अहिंसा के तरीकों से परिवर्तन करने का समर्थन करता है। यह सभी धर्म के साथ सम भाव और सद्भाव बनाए रखने का समर्थन करता है। इसमें धार्मिक कट्टरता और धर्म परिवर्तन के लिए कोई स्थान नहीं है। यह प्रकृति का संरक्षण करते हुए आगे बढ़ने का समर्थन करता है। प्रकृति को बिना नुकसान पहुंचाए प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर आगे बढ़ने का समर्थन करता है, क्योंकि इसका मानना है कि यह प्रकृति 'जीवों से है,जीवो के लिए है, जीवों के द्वारा है'। गांधी का सर्वोदय सिद्धांत सामाजिक –आर्थिक और राजनीतिक के साथ साथ सांस्कृतिक विकास का भी समर्थन करता है। बिना किसी जातीय, धार्मिक, भाषायी और रंग के आधार पर भेदभाव के। सर्वोदय सिद्धांत मानवीय संवेदनाओं और मानव मूल्यों के आधार पर आगे बढ़ने का समर्थन करता है, न कि लोभ–लालच के आधार पर किसी भी तरह से केवल संपत्ति बनाए रखने और संपत्ति प्राप्त करने की बात।

सबसे बड़ी बात तो यह है, कि उदारवादी भूमंडलीकरण के मूल में केवल और केवल पैसा कमाना और संपत्ति बनाना ही है। वह भी किसी भी तरीके से न की सामाजिक रूपांतरण करना, जिसमें हर व्यक्ति को समान हक और अधिकार प्राप्त हो । बाकी की कसर मशीनीकरण और यंत्र– उपकरणों ने कर दिया है। जिसकी वजह से लोगों के हाथों से रोजगार चले जा रहे हैं। पढ़े–लिखे लोगों की संख्या तो बढ़ती जा रही है। लेकिन हर हाथ को काम मिलना असंभव होता चला जा रहा है । बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। इसकी वजह से बहुत सारे नवयुवक गलत रास्ते पर चले जा रहे हैं। जिसकी वजह से नवयुवक आतंकवाद अथवा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल होते जा रहे हैं और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा संकट पैदा कर रहे हैं।

उदारवादी भूमंडलीकरण की वजह से आज दुनिया में अस्थिरता और युद्ध का संकट मंडरा रहा है। आर्थिक मंदी के चलते विकसित और बड़े राष्ट्र हथियार उद्योग को बढ़ावा देते जा रहे हैं। हथियारों को व्यापार की वस्तु बनाकर उसे कमाई का साधन बना लिए हैं। इसकी वजह से दुनिया के तमाम देशों में उनके बीच के परस्पर विवादों को बढ़ाकर उनके बीच युद्ध भड़का रहे हैं। जिससे वह अपने हथियारों को उन देशों को बेंच सके और हथियार उद्योग पैसे की कमाई कर सके। दुनिया के तमाम देशों के बीच सीमा या अन्य मुद्दों को लेकर जो भी परस्पर विवाद है वह इसीलिए नहीं सुलझा पा रहा है क्योंकि बड़े और विकसित देश उन्हें सुलझने नहीं देना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि अगर विवाद सुलझ गया तो युद्ध की

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

संभावना खत्म हो जाएगी और युद्ध की अगर संभावना खत्म हो जाएगी तो उनके हथियार बिक नहीं पाएंगे। जब हथियार बिकेंगे नहीं तो उनके हथियार उद्योग पैसे की कमाई नहीं कर पाएंगे। इसलिए विकसित और शक्तिशाली देश दुनिया में हमेशा विवादों को बढ़ाने और बनाए रखने में लगे हुए हैं।

उदारवादी भूमंडलीकरण पूंजी और तकनीक को भी शोषण और मुनाफा कमाने का एक जरिया बना रखा है क्योंकि विकसित और शक्तिशाली देश अपनी पूंजी और तकनीक दुनिया के किसी भी देश को अपनी शर्तों पर ही देते हैं। ये शर्तें ऐसी होती हैं कि जो अल्प विकसित और विकासशील देशों के राष्ट्रीय हितों से मेल नहीं खाती। लेकिन गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी के दबाव के चलते विकासशील और अल्प विकसित देश विकसित देशों की अनुचित और अन्यायपूर्ण शर्तों को मानने के लिए विवश होते हैं। अपनी पूंजी और तकनीक के बल पर ही विकसित देश विकासशील और अल्पविकसित देशों के संसाधनों का शोषण कर रहे हैं और उनके आंतरिक राजनीतिक गतिविधियों में भी हस्तक्षेप करते रहते हैं। उनकी विदेश नीति को भी प्रभावित करते हैं। जिससे कि विकासशील और अल्प विकसित देश उनके हमेशा पिछलग्गू अथवा उपग्रह देश बनकर के ही रहें। यह एक आर्थिक उपनिवेशवाद ही है जो शोषण और हिंसा पर आधारित है।

उदारवादी भूमंडलीकरण की नीतियां पर्यावरण के पूरी तरह से प्रतिकूल है। जिसका नतीजा दुनिया में जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी के रूप में देखा जा सकता है। इसकी वजह से आकस्मिक मौसमी परिवर्तन जैसे– बाढ़, सूखा तथा अकाल आदि देखने को मिल रहे हैं । वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण तमाम प्रकार के रोग जैसे– कैंसर, हृदय रोग एवं पक्षाघात इत्यादि बहुतायत में बढ़ते जा रहे हैं। दुनिया के प्राकृतिक संसाधन मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं। लेकिन किसी के लोभ और लालच को पूरा नहीं कर सकते। उपभोगवाद की संस्कृति ने मनुष्य को मशीन और भोग– विलास का गुलाम बना लिया है। जिसका परिणाम यह है, कि आज की पीढ़ी यह देखने को तथा महसूस करने को तैयार नहीं है कि वे अपने बाद की पीढ़ी के लिए क्या छोड़ कर जाएंगे। अगर हम प्रकृति के संसाधनों का अंधाधुंध दोहन इसी तरह करते रहेंगे तो एक ऐसा आएगा कि प्रकृति का पूरा खजाना ही खाली हो जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो न केवल मानव का ही बल्कि संपूर्ण जीवों का अस्तित्व ही संकट में आ जाएगा। उदारवादी भूमंडलीकरण ने सामाजिक स्तर पर भी मनुष्यों के बीच भेदभाव और वैमनस्य को बढ़ाया है। इसने अमीरी और गरीबी के बीच एक मोटी दीवार खड़ी कर दी है। इसकी नीतियों की वजह से अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब होते जा रहे हैं। अमीर वर्ग सुविधा संपन्न और प्रभुत्वशाली बनता जा रहा है,जबकि गरीब वर्ग सुविधासंपन्नहीन और प्रभुत्वहीन बनता जा रहा है। इसने सामाजिक समरसता को खत्म कर दिया है। मनुष्यों के बीच ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिस्पर्धा और हिंसा को बढ़ावा दिया है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं, कि उदारवादी भूमंडलीकरण मानव जीवन को खुशहाल नहीं बना सका और न ही मनुष्य की राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को समान रूप से पूरा कर सका और न ही प्रकृति का संरक्षण करने में समर्थ है, बल्कि यह तो प्रकृति के अंधाधुंध दोहन करके मनुष्य को अंधकार में धकेलना का कार्य कर रहा है। एक तरफ गरीबी और विवशता से जूझता हुआ इंसान है, दूसरी तरफ सुविधा भोगी दिमागी रूप से विक्षिप्त इंसान है। तकलीफ में दोनों हैं। यह किसी भी मनुष्य का चतुर्दिक विकास करने में असमर्थ है। लेकिन गांधी के सर्वोदय समाज में इन सारे प्रश्नों का उत्तर है, कि

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

किस तरह मानव जीवन को खुशहाल संतुष्ट और आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। जिससे हर मनुष्य अपनी क्षमता, इच्छा और आंतरिक शक्तियों के बल पर समग्र और संपूर्ण रूप से विकास कर सकता है और सभी मनुष्यों के साथ सद्भाव और सहअस्तित्व की भावना के साथ रह सकता है, बिना किसी भेदभाव के। प्रकृति और मानव के संबंध को भी स्वस्थ और मजबूत बनाए जा सकते हैं। बस मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना होगा। प्रकृति के संसाधनों की उतनी ही खपत करनी होगी जितना उनकी अनिवार्य आवश्यकता को पूरा करने के लिए जरूरी है। प्रकृति का संरक्षण करते हुए आगे बढ़ाने की सीख देता है, 'गांधी का सर्वोदय सिद्धांत'। गांधी का सर्वोदय सिद्धांत "वसुधैव कुटुंबकम" के उद्देश्य को पूरा करने की बात करता है। ऐसा वसुदेव कुटुंबकम जिसमें सभी राष्ट्र और सभी व्यक्ति एक परिवार की भांति रहते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार के ईर्ष्या, द्वेष प्रतिस्पर्धा, भेदभाव एवं हिंसा के लिए जगह नहीं होगी। सभी एक दूसरे के पूरक होकर एक दूसरे के सहचर बनकर एक दूसरे की आवश्यकताओं इच्छाओं और स्वतंत्रताओं का सम्मान करते हुए आगे बढ़ेंगे।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि गांधी जी का सर्वोदय सिद्धांत उदारवादी भूमंडलीकरण के सिद्धांत से ज्यादा नैतिक, ज्यादा व्यापक और ज्यादा मानवीय है। जो न केवल आज के मानव जीवन के संघर्ष को समाप्त कर सकता है, बल्कि मानव के भविष्य को भी खुशहाल बना सकता है। सर्वोदय सिद्धांत पूरी तरह से प्रकृति पोषित व्यवस्था पर आधारित है।

संदर्भ सूची ग्रन्थ–

1. सिंह प्रताप, गांधीजी का दर्शन, रिसर्च पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. दादा धर्माधिकारी 1988 सर्वोदय दर्शन सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी।
3. भारत कुमारया (1955), सर्वोदय नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद।
4. शंकरराव देव (1972), सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र सर्वोदय प्रकाशन दिल्ली।
5. महात्मा गांधी (2010), मेरे सपनों का भारत डायमण्ड बुक्स
6. सिंह अमर ज्योति (1905) महात्मा गांधी और भारत प्रकाशक अमर ज्योति सिंह ।
7. एम०के० यंग इण्डिया 1925 12. M-K- Gandhi (1972) Gandhi and senitation] New Delhi Govt- of India-